बताते हुए उदाहरण प्रस्तुत किया है।

. राजा दिलीप का परिचय संक्षेप में लिखें।

उत्तर– सम्राट दिलीप अपने विशाल आकार के अनुरूप बुद्धि से युक्त प्रतिभा के अनुरूप शास्त्रध्यान करने वाले, कर्मानुकूल फलसिद्धि प्राप्त करने वाले हैं। मनोरम राजोचित गुणों के कारण पराक्रम, प्रभाव, दया से सम्पन्न राजा दिलीप हैं। शिक्षक या सारथि की भाँति नियमन करने वाले राजा दिलीप के रथचक्र के समान चलने वाले प्रजाजन महर्षि मनु से लेकर पूर्ण अभ्यस्त प्रचलित मार्ग का किञ्चितमात्र भी अतिक्रमण नहीं किये हैं। राजा दिलीप ने प्रजाजनों की सुख-समृद्धि के लिये ही उनसे राजकीय कर लिया है। उन राजा दिलीप की चतुरङ्गिणी सेना उनका (छत्र, चामरादिरूप) उपकरण मात्र है।

उनकी सेना के चार अङ्ग है—अश्वरोही अर्थात् घुड़सवार, हाथी सेना, रथसवार एवं पैदल सेना थे। राजा दिलीप के कार्य सामदानादि नीतिप्रयोग जन्मान्तर के संस्कारों की तरह अनुमान किये जाते थे । मल्लिनाथ द्वारा स्पष्ट है कि हर्ष-शोकादि भावों को सूचित करने वाले भृकुटि, मुखराग आदि बाहरी चिह्न आकार हैं तथा भीतरी हृदयगत विकार इङ्गित है। राजा के मनोविकार किसी भी प्रकार प्रकट नहीं होने चाहिए। नीति भी कहती है— मन्त्रणा केवल दो के बीच होती है। तृतीयादि सभी उसमें वर्जित हैं। उन्होंने निर्भय होकर अपने शरीर की रक्षा की, बिना रोगी होते हुए भी धर्म का सेवन किया, लोभी न होते हुए धन-ग्रहण किया तथा अनासक्त रहते हुए सुख का अनुभव किया।

दूसरे के वृत्तान्त ज्ञात होने पर भी वाणी को संयमित रखना, प्रतीकार की शक्ति होने पर भी क्षमा करना, दान देकर भी आत्मप्रशंसा न करना, इस प्रकार से सम्राट् दिलीप के ज्ञान, मोनादि गुण परस्पर सहचारी जैसे हो गये थे।

सांसारिक विषयों के वश में न होते हुए अनाकृष्ट, वेद-वेदाङ्गादि चौदह विद्याओं के पारदर्शी तथा धर्म में रुचि रखने वाले उस सम्राट् दिलीप को वृद्धवास्था के बिना ही ज्ञान वृद्धत्व प्राप्त था। प्रजाजनों को विनम्रता आदि की शिक्षा देने से, उनकी रक्षा करने से तथा अन्नादि से पोषण करने से भी वे राजा दिलीप ही उनके पिता थे। लोकमर्यादा की स्थिति के लिये अपराधियों को दण्डित करनेवाले, सन्तान के लिये विवाह आदि करनेवाले तथा विद्वान् उस राजा दिलीप के पुरुषार्थ धर्मरूप ही हो गये। राजा दिलीप ने यज्ञ करने के लिए पृथ्वी का दोहन किया तथा देवराज इन्द्र ने धान्यसमृद्धि के लिये स्वर्ग का दोहन किय। इस प्रकार दोनों ने परस्पर सम्पत्ति के आदान-प्रदान से पृथ्वी एवं स्वर्ग दोनों भुवनों को परिपुष्ट किया।

अन्य राजा लोग भय से रक्षा करने वाले सम्राट् दिलीप के यश का अनुकरण नहीं कर सके। जिस प्रकार रोगी को कड़वी औषधि हितकर होती है उसी प्रकार राजा दिलीप का द्वेष करने के योग्य बैरी होता हुआ भी सज्जन प्रिय होता है। विधाता ने राजा दिलीप की क्षिति, जल, तेज, वायु, आकाश आदि पञ्चमहाभूतों की कारण सामग्री से रचना की है—यह निश्चय है, क्योंकि उनके उदारता, दानशीलता आदि समस्त गुण पञ्चमहाभूतों की ही तरह केवल दूसरों के प्रयोजन को सिद्ध करने वाले थे।

राजा दिलीप की मगध के राजकुल में उत्पन्न हुई यज्ञपत्नी दक्षिणा के समान सुदक्षिणा नाम की पत्नी महारानी थी। पृथिवीपति सम्राट् दिलीप अन्तःपुर की रानियों की अधिकता होने पर भी दृढ़ स्वभाववाली सुदक्षिणा से तथा राज्यलक्ष्मी से ही अपने को पत्नीयुक्त समझते थे। उस राजा दिलीप ने अपने समान गुणवाली पत्नी सुदक्षिणा में पुत्रोत्पत्ति के लिये उत्सुक रहते हुए विलम्बयुक्त फल वाली इच्छाओं से अर्थात् शंका में रहकर समय व्यतीत किया। राजा दिलीप ने सन्तान-प्राप्ति हेतु यज्ञ अनुष्ठान करने के निमित अपनी भुजा से उतारे गये प्रजापालनरूप गंभीर भार को मंत्रियों पर डाल दिया।

मंत्रियों के ऊपर राज्यभार सौंप देने के बाद अपने पुत्र-प्राप्ति की कामनाओं से वे दोनों पति-पत्नी (दिलीप-सुदक्षिणा) पवित्र होगर भगवान् ब्रह्माजी की पूजा करके कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में गये।